मधुबन ओम् शान्ति अंक 348 जुलाई 2021

# पत्र-पुष्प

## "नथिंग न्यु की स्मृति द्वारा हलचल से परे एकरस, अचल अडोल स्थिति बनाने की विशेष प्रेरणायें"

**(याद पत्र 16-6-21)**

**प्राणप्यारे** अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा एकरस स्थिति के आसन पर स्थित रह, मन्सा द्वारा अपनी सूक्ष्म शक्तियों का दान करने वाले, लाइट-माइट हाउस सम्पन्न शक्तिशाली याद द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश-विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ''अटेन्शन'' की विधि द्वारा याद को शक्तिशाली, सहज और निरन्तर बनाने के उमंग-उत्साह में रह सर्व आत्माओं को सूक्ष्म शक्तियों की सकाश दे रहे होंगे।

यह समय भी बेहद की वैराग्य वृत्ति तरफ विशेष इशारा कर रहा है। स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन का आधार यही वैराग्य वृत्ति है। बाबा कहते बच्चे, अन्त समय में चारों ओर अति का वातावरण होगा। आप बच्चों को अब अपनी अन्तिम कर्मातीत स्थिति का आव्हान कर सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। तो जरूर आप सभी विशेष मन और मुख का मौन रख, नथिंग न्यु की स्मृति द्वारा सदा हलचल से परे एकरस स्थिति का अनुभव कर रहे होंगे! जबकि ड्रामा ने सेवाओं के विस्तार को सार में समा लिया है। तो सभी अपने संकल्पों की गति को भी सेकेण्ड में स्टॉप कर लाइट माइट सम्पन्न स्थिति का अनुभव करते रहो। इस स्थिति द्वारा ही साक्षात्कार की लीला शुरू होगी और वही परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी।

योग में जब और सब संकल्प शान्त हो, एक ही संकल्प रहता ''बाप और मैं'', इसी को ही पॉवरफुल योग कहते हैं। ऐसी याद में सेवा के संकल्प भी समा जाते हैं। बाबा कहते बच्चे, अब ज्ञान योग की ऐसी शक्ति जमा करो जो स्टॉप कहते ही सब संकल्प स्टॉप हो जाए। फुल ब्रेक लगे, ढीली नहीं। याद का लिंक सदा जुटा रहे, सच्चे दिल का प्यार एक बाबा से हो तो सेकेण्ड में बिन्दु बन, बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। यही शक्तिशाली याद वायुमण्डल को परिवर्तन करती है। तो समय प्रमाण अभी ऐसी योगयुक्त एकरस अचल अडोल स्थिति द्वारा परिस्थितियों को पार करते आगे बढ़ते चलो। बाबा कहते बच्चे, अब समय के इशारों को समझते हुए तीव्र पुरुषार्थ की रेस करो।

वैसे तो अभी इस मम्मा के स्मृति मास में चारों ओर बहुत अच्छी तपस्या की लहर चल रही है। मम्मा की मीठी मीठी शिक्षाओं को स्मृति में लाते हुए सभी उसका स्वरूप बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। जैसे हमारी मीठी माँ ने हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ अपने आप पर फुल अटेन्शन रखा, संगम के हर संकल्प, श्वांस और समय को सफल किया। सदा एक बाप की याद में, एक के प्यार में समाई रही। उनका विशेष यही स्लोगन था कि हुक्मी हुक्म चला रहा है। सदा हाँ जी, जी बाबा के सिवाए और कोई संकल्प नहीं किया। इसी पुरुषार्थ से वह नम्बरवन चली गई। अभी यह जुलाई मास फिर हमारी मीठी दीदी मनमोहिनी जी का स्मृति मास है, उनका भी स्लोगन रहा कि ''अब घर चलना है'' सब बातों से उपराम, न्यारी प्यारी बन सम्पन्न बन गई। ऐसे हम सभी अपने यज्ञ के पूर्वजों को याद करते, उनकी शिक्षाओं को स्वरूप में लाते सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते, उड़ाते चलें।

इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ, सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

*बी.के.रतनमोहिनी*

# ये अव्यक्त इशारे

## जुलाई 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

### (अ) अब लगन की अग्नि को ज्वाला रूप बनाओ

**1)** बापदादा बच्चों को विशेष ईशारा दे रहे हैं - बच्चे अब तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ, ज्वालामुखी बनो। जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब रहे हुए हैं - उन्हें ज्वाला स्वरूप की याद से भस्म करो।

**2)** पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि, ज्वाला रूप की याद ही भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी, इससे ही बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित होगी। याद की अग्नि एक तरफ उस अग्नि को समाप्त करेगी, दूसरी तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करोयगी, इससे ही आत्मायें पापों की आग से मुक्त हो सकेंगी।

**3)** समय प्रमाण अब सर्व ब्राह्मण आत्माओं को समीप लाते हुए ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने की सेवा करो, उसके लिए चाहे भट्ठियां करो या आपस में संगठित होकर रूहरिहान करो लेकिन ज्वाला स्वरूप का अनुभव करो और कराओ, इस सेवा में लग जाओ तो छोटी-छोटी बातें सहज परिवर्तन हो जायेंगी।

**4)** योग को ज्वाला रूप बनाने के लिए सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो। स्टॉप कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर सारे दिन में यूज़ करो। पावरफुल ब्रेक द्वारा मन-बुद्धि को कन्ट्रोल करो, जहाँ मन-बुद्धि को लगाना चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाए।

**5)** योग माना शान्ति की शक्ति। यह शान्ति की शक्ति बहुत सहज स्व को और दूसरों को परिवर्तन करती है, इससे व्यक्ति भी बदल जायेंगे तो प्रकृति भी बदल जायेगी। व्यक्तियों को तो मुख का कोर्स करा लेते हो लेकिन प्रकृति को बदलने के लिए शान्ति की शक्ति अर्थात् योगबल ही चाहिए।

**6)** योग में जब और सब संकल्प शान्त हो जाते हैं, एक ही संकल्प रहता ''बाप और मैं'' इसी को ही पावरफुल योग कहते हैं। बाप के मिलन की अनुभूति के सिवाए और सब संकल्प समा जायें तब कहेंगे ज्वाला रूप की याद, जिससे परिवर्तन होता है।

**7)** जब योग में बैठते हो तो समाने की शक्ति सेकण्ड में यूज़ करो। सेवा के संकल्प भी समा जाएं इतनी शक्ति हो जो स्टॉप कहा और स्टॉप हो जाए। फुल ब्रेक लगे, ढीली ब्रेक नहीं। अगर एक सेकण्ड के बजाए ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर कहेंगे।

**8)** शक्तिशाली ज्वाला स्वरूप की याद तब रहेगी जब याद का लिंक सदा जुटा रहेगा। अगर बार-बार लिंक टूटता है, तो उसे जोड़ने में समय भी लगता, मेहनत भी लगती और शक्तिशाली के बजाए कमजोर हो जाते हो।

**9)** पावरफुल मन की निशानी है - सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच जाए। मन को जब उड़ना आ गया, प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच सकता है। अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में, सेकण्ड की रफ्तार है - अब इसी अभ्यास को बढ़ाओ।

**10)** पावरफुल याद के लिए सच्चे दिल का प्यार चाहिए। सच्ची दिल वाले सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआयें प्राप्त करते हैं, जिससे सहज ही एक संकल्प में स्थित हो ज्वाला रूप की याद का अनुभव कर सकते हैं, पावरफुल वायब्रेशन फैला सकते हैं।

**11)** योग में सदा लाइट हाउस और माइट हाउस की स्थिति का अनुभव करो। ज्ञान है लाइट और योग है माइट। ज्ञान और योग - दोनों शक्तियां लाइट और माइट सम्पन्न हों - इसको कहते हैं मास्टर सर्वशक्तिमान। ऐसी शक्तिशाली आत्मायें किसी भी परिस्थिति को सेकण्ड में पार कर लेती हैं।

**12)** ज्वाला स्वरूप की स्थिति का अनुभव करने के लिए निरन्तर याद की ज्वाला प्रज्वलित रहे। इसकी सहज विधि है - सदा अपने को ''सारथी'' और ''साक्षी'' समझकर चलो। आत्मा इस रथ की सारथी है - यह स्मृति स्वत: ही इस रथ (देह) से वा किसी भी प्रकार के देहभान से न्यारा बना देती है। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियाँ अपने कन्ट्रोल में रहती हैं। सूक्ष्म शक्तियां ''मन-बुद्धि-संस्कार'' भी ऑर्डर प्रमाण रहते हैं।

**13)** सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानी क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की, तो फॉलो फादर करो। जैसे बाप देह को अधीन कर प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं होते, इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। सारथी स्वत: ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे और सबकुछ करते भी माया की लेप-छेप से निर्लेप रहेंगे।

**14)** कई बच्चे कहते हैं कि जब योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानी होने के बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना

चाहिए क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे। उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं। सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे इसलिए जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो, नहीं तो धोखा मिल जायेगा।

**15)** आप बच्चों के पास पवित्रता की जो महान शक्ति है, यह श्रेष्ठ शक्ति ही अग्नि का काम करती है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। जब आत्मा पवित्रता की सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होती है तो उस स्थिति के श्रेष्ठ संकल्प से लगन की अग्नि प्रज्वलित होती है और किचड़ा भस्म हो जाता है, वास्तव में यही योग ज्वाला है। अभी आप बच्चे अपनी इस श्रेष्ठ शक्ति को कार्य में लगाओ।

# (ब) ज्वाला स्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

**16)** तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आयें। यह तपस्वी स्वरुप औरों को देने का स्वरूप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे महान तपस्वी आत्मायें ज्वाला रूप शक्तिशाली याद द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराती हैं।

**17)** अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सबकुछ भस्म करो। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। असुर कोई व्यक्ति नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म किया। यह अभी आपकी ज्वाला-स्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्जवलित करो जिसमें यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जाये।

**18)** जैसे दु:खी आत्माओं के मन में यह आवाज शुरू हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन में यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी। विनाशकारियों को कल्याणकारी आत्माओं के संकल्प का इशारा चाहिये इसलिए अपने एवर-रेडी बनने के पॉवरफुल संकल्प से ज्वाला रूप योग द्वारा विनाश ज्वाला को तेज करो।

**19)** जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करें, इसके लिए ''मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ'', इस स्वमान के स्मृति की सीट पर स्थित होकर कार्य करो तो विघ्न सामने तक भी नहीं आयेंगे।

**20)** जब तक आपकी याद ज्वाला रूप नहीं बनी है तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रुप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है क्योंकि ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधार-मूर्त आत्मायें अभी स्वयं ही सदा ज्वाला-रूप नहीं बनी हैं। अब ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प लो और संगठित रूप में मन-बुद्धि की एकाग्रता द्वारा पावरफुल योग के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ।

**21)** ज्वाला-रुप बनने के लिए यही धुन सदा रहे कि अब वापिस घर जाना है। जाना है अर्थात् उपराम। जब अपने निराकारी घर जाना है तो वैसा अपना वेष बनाना है। तो जाना है और सबको वापस ले जाना है - इस स्मृति से स्वत: ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी व बाप समान बन जायेंगे।

**22)** जितना स्थापना के निमित्त बने हुए ज्वाला-रूप होंगे उतना ही विनाश-ज्वाला प्रत्यक्ष होगी। संगठन रूप में ज्वाला-रूप की याद विश्व के विनाश का कार्य सम्पन्न करेगी। इसके लिए हर सेवाकेन्द्र पर विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहें तो विनाश ज्वाला को पंखा लगेगा। योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी, ज्वाला से ज्वाला प्रज्जवलित होगी।

**23)** लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ ज्वाला-रूप का ही रहा हुआ है। पाण्डवों के कारण यादव रुके हुए हैं। पाण्डवों की श्रेष्ठ शान, रुहानी शान की स्थिति यादवों के परेशानी वाली परिस्थिति को समाप्त करेगी। तो अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो। ज्वाला स्वरूप अर्थात् लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति को समझते हुए इसी पुरुषार्थ में रहो।

**24)** विशेष याद की यात्रा को पॉवरफुल बनाओ, ज्ञान-स्वरुप के अनुभवी बनो। आप श्रेष्ठ आत्माओं की शुभ वृत्ति व कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, पुकार करने वाली आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की अनुभूति करायेगी।

**25)** जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालो तो नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है, ऐसे जब बाप के याद के लगन की अग्नि में पड़ते हो तो परिवर्तन हो जाते हो। मनुष्य से ब्राह्मण बन जाते, फिर ब्राह्मण से फरिश्ता सो देवता बन जाते। लग्न की अग्नि से ऐसा परिवर्तन होता है जो अपनापन कुछ भी नहीं रहता, इसलिए याद को ही ज्वाला रूप कहा है।

**26)** अभी अच्छा-अच्छा कहते हैं, लेकिन अच्छा बनना है यह प्रेरणा नहीं मिल रही है। उसका एक ही साधन है - संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप बनो। एक एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लगेंगे।

**27)** जैसे किला बांधा जाता है, जिससे प्रजा किले के अन्दर सेफ

रहे। एक राजा के लिए कोठरी नहीं बनाते, किला बनाते हैं। आप सभी भी स्वयं के लिए, साथियों के लिए, अन्य आत्माओं के लिए ज्वाला रूप याद का किला बांधो। याद के शक्ति की ज्वाला हो तो हर आत्मा सेफ्टी का अनुभव करेगी।

**28)** पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते हो जब याद ज्वाला स्वरूप होगी। इसी याद द्वारा अनेक आत्माओं की निर्बलता दूर होगी। इसके लिए हर सेकेण्ड, हर श्वांस बाप और आप कम्बाइण्ड होकर रहो। कोई भी समय साधारण याद न हो। स्नेह और शक्ति दोनों रूप कम्बाइन्ड हो।

**29)** अभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भस्म करो। तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप याद, इस याद द्वारा ही माया वा प्रकृति का विकराल रूप शीतल हो जायेगा। आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देगा।

**30)** ज्वाला स्वरूप याद के लिए मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। इससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी। इसके लिए अब संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो अर्थात् समेटने की शक्ति धारण करो।

**31)** इस कलियुगी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत वृक्ष की दुर्दशा देखते हुए ब्रह्मा बाप को संकल्प आता है कि अभी-अभी बच्चों के तपस्वी रूप द्वारा, योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म कर दें, परन्तु इसके लिए संगठन रूप में फुल फोर्स से योग ज्वाला प्रज्जवलित चाहिए। तो ब्रह्मा बाप के इस संकल्प को अब साकार में लाओ।

# त्रिमूर्ति दादियों के प्रेरणादाई शिक्षाप्रद महावाक्य

*शिवबाबा याद है ?* *ओम् शान्ति* *मधुबन*

## दादी गुल्जार जी के अमृतवचन

## "बाबा का प्यार प्रैक्टिकल चलन और चेहरे से दिखाओ, कोई भी बात आपकी खुशी को छीन न ले जाये, इसका ध्यान रखो" (2006)

हम सबका परमानेन्ट एड्रेस तो मधुबन ही है। बाकी बाबा से जो प्राप्ति की है वो दूसरों को बाँटने के लिए, बाबा के बच्चे बनाने के लिए भिन्न-भिन्न सेवास्थानों पर रहते हैं। वो तो हर एक में जितनी हिम्मत है, उमंग है, कर ही रहे हैं और करते ही रहेंगे, यही हमारे ब्राह्मण जीवन का काम है। बाबा ने सबको दो काम दिये हैं - एक तो बाप को याद करना, दूसरा सेवा द्वारा विश्व का कल्याण करना, जिससे हमारी जीवन कल्याणकारी बन जाती है। अगर याद कम होती है, तो भी जीवन में वो खुशी नहीं रहती है। वेस्ट थॉटस बहुत चलते हैं और अगर सेवा नहीं करते तो भी मन फालतू चीज़ों में जाता है इसलिए मन को बिजी रखना बहुत जरूरी है। तो मन का बहुत महत्व है। आत्मा मालिक अगर थोड़ा अलमस्त है, अलबेला है, अपने कामकाज का ही होश नहीं है, तो कर्मेन्द्रियों रूपी नौकर भी एडवांटेज उठाते हैं और मन सर्वेन्ट तो उसका उल्टा फायदा लेगा ही इसलिए बाबा कहते हे आत्मा तुम कर्मेन्द्रियों की मालिक बनके इनसे कर्म कराओ। आत्मा और शरीर के नॉलेजफुल के साथ-साथ नॉलेजेबुल भी बनो तो कहीं फसेंगे नहीं।

बाबा से हम सबका वायदा है कि बाबा के साथ रहना है, साथ चलना है, तो जरा भी संस्कारों में कुछ भी छिपा हुआ भी होगा तो बाबा के साथ जा नहीं सकेंगे। बाबा ने यह भी कहा कि बच्चे सब कुछ अचानक होना है, समय की समाप्ति भी अचानक होगी। बाबा हमें डेट नहीं बतायेगा लेकिन एवररेडी रहना है, यह बाबा ने बताया है। क्योंकि अपने संस्कारों को तो हर एक खुद जानते हैं। भले कोई अलबेलेपन में अपने आपको चलाये लेकिन मन जानता जरूर है कि मेरे में यह कमी है। तो इतना अलबेलापन नहीं होना चाहिए जो धोखा मिल जाये। इसलिए कोई भी अपनापन न रख करके अपनी चेकिंग करना जरूरी है। चेक करो मेरी मन्सा में, वाचा में, कर्मणा में, सम्बन्ध-सम्पर्क में क्या कमी है? इन चार चीज़ों का चार्ट हमें चेक करना है। अगर मानो एक चीज़ में भी हमारी कमी है तो अटक तो जायेंगे। जैसे परिवार में एक दो को देख हल्केपन का अनुभव होता है, ऐसे चार ही सबजेक्ट में ऐसा अनुभव है? किसी में कोई कमी है, उसको वो छोड़ रहा है और हम उसको धारण कर रहे हैं, तो क्या यह ब्राह्मणपन की निशानी है? किसी की फेंकी हुई चीज़ को लेना क्या यह राइट है? रॉयल्टी है? तो क्यों किसी की बुराई अपने अन्दर रखते! मम्मा कहती थी किचड़े का डिब्बा हो क्या? इसलिए काम की बात के सिवाए और कुछ सुनो ही नहीं, क्योंकि हमारी कमी का प्रभाव हमारे सेवा साथियों पर भी आता है। जैसे ब्लड कनेक्शन होता है तो कहते हैं तुम्हारे परिवार में किसी को यह बीमारी थी क्या? यहाँ है सेवा का कनेक्शन, जिसके निमित्त

हम बनते हैं, उसमें वही वायुमण्डल फैलता है। अगर हम मिलनसार होंगे तो सारा क्लास मिलनसार होगा। हम मुरली सुनाने के लिए बाबा के तख्त पर बैठते हैं, यह कम नहीं है। अज्ञानकाल में तो कोई को गुरु की गद्दी पर बैठने नहीं देते हैं। हमको तो बाबा कहते बच्ची, तुम मेरे तख्त पर बैठके मुरली सुनाओ। भगवान अपना तख्त देवे, कम है क्या! लेकिन हम उस विधि से उस तख्त का इस्तेमाल करते हैं? भाषण करने वाले को भासन (बर्तन) मांजना भी ऐसे ही लगे, जैसे भाषण कर रहे हैं। बाबा बहुत ट्रायल करता था, बाबा कहता था भासना देके आई या सिर्फ तुतारी बजाके आ गई? बाबा का परिचय देके आई या अपनी तिकतिक करके आई? ऐसे बाबा ने हम सबको सिखाया है तो आप सबको बहुत ध्यान रखना है। बाबा कहते हैं टीचर माना जो अपने फीचर से फ्यूचर का साक्षात्कार कराये, यानि सुख-शान्ति की दुनिया का वायब्रेशन दे। सतयुग में क्या होगा? सुख-शान्ति होगी ना। इसके लिए एक तो हमें अपने चेहरे को मुस्कराता हुआ रखना है। गोल-गप्पे मुआफिक फूला हुआ नहीं, हमेशा मुस्कराता हुआ। कोई भी मिले, क्रोधी भी मिले तो भी आप उन्हें मुस्कराके मिलो। क्यों? आग है क्रोध, क्रोध में एक शब्द बोलो, तो जैसे तेल डालो, ऐसे हो जाता है। इससे आग भड़केगी इसलिए अगर आप ऐसों को मुस्कराके मिलेंगे तो पानी की बूँद डालेंगे। चलो, वो एक मिनट तो चुप रहेगा। तो अपने घर में भी साथियों में भी चैरिटी बिगेन्स एट होम, मुस्कराके मिलो। किसका स्वभाव आफिशियल हो तो हम भी उसी तरह से मिले, नहीं। मुस्कराके मिलें, मुस्कराना तो आता है ना! तो एक तो मुस्कराते मिलो और दूसरा कोई भी आयेगा, मिलेगा उसको कुछ तो पिलायेंगे ना, चलो पानी पिलाओ लेकिन हम कहते हैं सभी के पास एक एवररेडी शर्बत है, वो कहीं से मंगाना नहीं पड़ेगा, वो है ''मीठे बोल।'' तीसरी चीज़ कुछ तो खिलायेंगे ना। तो आपके पास एक मिठाई भी एवररेडी है, वो है दिलखुश मिठाई। दिलखुश हो करके आप किसी से भी बात करो तो उसकी भी दिल खुश हो जायेगी।

अपने घर वालों से प्यार है, देश से प्यार है, कहते हो मेरा भारत .. तो भारतवासियों से प्यार तो करो। इसके लिए न नौकर चाहिए, न पैसा चाहिए। नहीं तो बहाने देते हैं ना। कोई शर्बत तो पिलाये। लेकिन उसके लिए नौकर चाहिए, पैसा चाहिए, मिठाई बनाने वाला चाहिए... ऐसे बहाने देते हैं ना। यह तो कोई ऐसी बहाने वाली बात ही नहीं है। यह सब तो एवररेडी है, इसमें बहाना भी नहीं चलेगा।

तो हम ब्राह्मणों को ऐसे होना चाहिए। सभी से प्यार से मुस्कराते मिलना चाहिए। कई ऐसे मिलते हैं जैसे कोई प्राप्ति ही नहीं है, ऐसे चेहरे लगते हैं जैसे सीरियस सीरियस... तो ऐसे लगता है जैसे इन्हें खुशी ही नहीं है। चेहरे पर खुशी, मुस्कराने से खुशी तो नज़र आये ना। ऐसे चेहरे लगते हैं जैसे पता नहीं क्या संकट में है! वो चल रहा है या क्या है... ऐसा नहीं होना चाहिए, खास ब्राह्मणों का चेहरा। अरे! मुस्कराना तो आना चाहिए ना। इसमें कोई खर्चा थोड़ेही है इसलिए सभी से मुस्कराके मिलो, अपने साथियों से भी। कोई किसी का भाव उल्टा सुल्टा होगा तो मुस्कराने से फर्क पड़ जाता है। डांटना ठीक नहीं है, शिक्षा दो लेकिन क्षमा और शिक्षा दोनों साथ-साथ हो। नहीं तो शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। और ही मन में भय हो जाता है फिर वह दूर दूर भागता है, इसलिए ऐसा नहीं करो। हमेशा मुस्कराते रहो। कोई कैसा भी हो, मानो हमारी किससे नहीं बनती है, कोई है पिछला हिसाब चलो लेकिन आप हिसाब में क्यों पड़ती हो? वो तो अपना हिसाब चुक्तू कर रहे हैं, हम उसके साथी क्यों बनें। आप उसमें भाग नहीं लो। मुस्कराना खुशी है, तो खुशी क्यों जायें, ब्राह्मण बने और खुशी चली जाये, यह नहीं होना चाहिए।

खुशी जाती कैसे है? जब कोई बात बाहर से आती है या प्रकृति द्वारा कोई पेपर आता है। जैसे यह सुनामी आई, कुछ भी ऐसा इतफाक हो जाता है.. लेकिन वह बाहर से बात आई वह मेरी खुशी क्यों ले गई? खुशी कोई फालतू है क्या! खुशी तो काम की चीज़ है ना। बातें तो चली जाती हैं, रूकती नहीं हैं लेकिन हमारी खुशी ले जाती हैं, कमाल है! बात पॉवरफुल हो गई, भगवान की दी हुई चीज़ को आप सम्भालके रखेंगे या गंवायेंगे! खुशी हमारे परमात्मा पिता की दी हुई चीज़ कहो, वरदान या गिफ्ट कहो, वर्से में जायदाद कहो, भगवान ने हमें अविनाशी खुशी दी है। तो भगवान की दी हुई चीज़ एक छोटी-सी ऐसे ही क्यों जाने देते! बात तो आई, चली गई लेकिन मेरी खुशी ले गई, और हम भी दे देते हैं। इतना तो नहीं कमजोर बनो ना! अपनी खुशी कभी नहीं गँवाओ। खुशी चली जाती है तो समझो मैं कोमा में चली गई। बिल्कुल कोमा जैसी स्टेज होती है। फिर कुछ कर नहीं सकते हैं, कुछ भी करना अच्छा नहीं लगता है। तो ब्रह्माकुमारी और कोमा की लाइफ? यह क्या हुई, खराब हुई ना। तो खुशी कभी नहीं गँवाओ। बात तो चली जाती है, फिर हम क्यों उसको रख देते हैं, यह क्यों हुआ? यह क्या कहा? कौन है यह? कब तक करेगा?... इसमें खुशी चली जाती है इसलिए बाबा कहता है त्रिनेत्री हो, तो खुश रहो और खुशी बाँटो। अपनी खुशी को कभी भी जाने नहीं दो।

ब्रह्माकुमारी माना मुस्कराती रहे, बस। दृष्टि में बिन्दी बाबा रहे। नयनों में कोई देखे उसको वही बाबा की शान्ति की, शक्ति की वायब्रेशन आये यही तो बाबा को प्रत्यक्ष करेगा ना। बाकी चलो भाषण कर लिया झण्डा लहरा लिया इससे प्रत्यक्ष थोड़ेही ही होगा। तो प्रत्यक्ष करना है तो हमारे में यह बाबा जो कहता है वो प्रत्यक्ष करना है तभी बाबा प्रत्यक्ष होगा। नहीं तो कैसे होगा? कहने से थोड़े ही होगा शिवबाबा आ गया... कहेंगे ऐसे ही गपोड़े मार रहे हैं शिवबाबा आ गया...। दिखाई तो देता ही नहीं है इनकी शक्लें ही नहीं दिखाई देता है, लगता ही नहीं है, वो असर ही नहीं होता है ना। इसलिए पहले दिल में अपने प्रत्यक्ष करो बाबा को। चलन में बाबा दिखाई दें, बैठने में उठने में प्यार है बाबा से तो बाबा को प्रत्यक्ष तो करना है ना। तो प्यार प्रैक्टिकल में चेहरे से चलन से दिखाओ, बाकी बोलने से कोई नहीं सुनता है आजकल। अनुभव कराओ, वो कैसे होगा? सिर्फ भाषण द्वारा ही नहीं परन्तु चलते-फिरते अपने

चलन और चेहरे से अनुभव करा सकते हैं। तो अभी करो कुछ कमाल।

5 हजार वर्ष के बाद हम सब आपस में मिले हैं, फिर यह परिवार नहीं मिलेगा, बार-बार थोड़ेही मिलेंगे पहचान से। सतयुग में होंगे लेकिन पहचानेंगे नहीं ना! अभी संगम पर ही एक दो को पहचानते हैं कि हम सब ब्राह्मण है। तो मुस्कराके मिलो और बाबा की चार सबजेक्ट चेक करो। सूक्ष्म में स्वप्न में भी कभी वो संस्कार इमर्ज नहीं हों। बाबा ने कहा ना रावण को सिर्फ मारो नहीं, जलाओ। जलाके फिर अस्थियां भी सागर में डालो। नाम-निशान गुम। ऐसे नहीं सोचो कि परिवर्तन तो कर रही हूँ, नहीं, खत्म करो बीज सहित, अंश मात्र भी नहीं रहे। अंश भी होगा तो वंश पैदा हो सकता है। अंश से तो वंश पैदा होगा ना। तो धमाल नहीं करना, कमाल करना। हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा। हिम्मत है तो मदद मिलेगी। अच्छा, ओम् शान्ति।

# दीदी मनमोहिनी जी की दिव्य स्मृतियां (विशेषतायें)

## दादी प्रकाशमणि जी एवं दादी जानकी जी द्वारा - 1983

**1)** दीदी की शुभ भावनायें आज भी हमारे साथ हैं। यह आवाज हरेक के दिल से निकलता है क्योंकि दीदी ने स्वयं प्रति सर्व कामनायें समाप्त कर औरों के लिए शुभ कामनायें रखी। यादगार हृदय में छप जाता और शिक्षायें मस्तक पर छप जाती है। वो भूल नहीं सकती। दीदी की मीठी शिक्षायें आज भी सबको याद हैं और याद रहेंगी।

**2)** दीदी के लिए बाबा ने कहा - इष्ट और अष्ट को कोई कष्ट नहीं हो सकता। रूप ऐसा है जो किसको दिखाई नहीं पड़ता। अगर दु:खधाम को सामने रखकर देखते तो दु:ख की महसूसता होती है लेकिन राज़ों भरा राज़ गुप्त में था। भाग्यविधाता ने ऐसा पार्ट दिया है, इकट्ठे रहे हैं, इकट्ठे रहेंगे दु:ख की तो बात ही नहीं। यह मुहब्बत तो न मिटी है, न मिटेगी। रूहानी मुहब्बत जो कर्मातीत बनने में, एक दो को आगे बढ़ाने में दुआ का काम करती है। इस पार्ट को देखते और भी उमंग बढ़ता है कि अब हमें नम्बरवन में दीदी समान बनना है। समान बनने की प्रैक्टिस भी करनी है, और उनके समान हर संकल्प में सेवा की भावना, समीप लाने की भावना भी रखनी है।

**3)** दीदी जी कोई भी कारण का निवारण सेकण्ड में निकाल कर दे देती थी। सेवा करते भी पहले बाबा को आगे रखती थी। निचाई ऊँचाई भी बाबा देखे, आगे भी बाबा, पीछे भी बाबा, वह जो कराये, हमें क्या करना है। दो पुरों के बीच में। जैसे गेहूँ दो पुरों के बीच में आकर पीसे तो खाने लायक बनें। ऐसे ही आगे पीछे बाबा को रखने से आत्मा पीस जाती है यानी पवित्र बन जाती है, लायक बन जाती है, तभी आत्मा नई दुनिया के लिए योग्य बन सकती है।

**4)** सजनी वो जो साजन के साथ चले, जैसे चलाये वैसे चले। सखा, साजन का सम्बन्ध जुड़ाने के निमित्त हमारी दीदी बनी। उन्होंने ट्रेनिंग मुख से नहीं, अपनी लाइफ से दी। दीदी से हमें मर्यादा सम्पन्न सहज लाइफ मिली, उनकी शिक्षायें बहुत प्यारी लगती हैं। दीदी कहती थी टीचर को अपना फ्रैण्ड बना लो तो शिक्षायें सहज ही जीवन में आ जायेंगी, यह सहज युक्ति है।

**5)** तुम्हीं से खेलू, तुम्हीं से खाऊं.. दीदी को इसी संस्कार ने बाप समान बना दिया। जैसे दीदी ने बाबा को मेरा बनाया तो मेरा बनाने से बाबा के साथ-साथ सबको सकाश देने के निमित्त बन गई, ऐसे ही बाबा ना सिर्फ मेरा है, जो मेरा वह सबका है।

**6)** दीदी को जन्म से ही सयानी कहते थे। सयाना वो जो जल्दी मोल्ड हो जाए। जो खुद इशारे से चले और इशारे से चलाये। कोई कोई होते जो बात को सीधा नहीं बोलते, बात को घुमा-फिराकर कहते हैं, उसको भी सयाना नहीं कहेंगे। हम ऐसे सयाने बने जो कुछ भी मिक्स न करें। सच्चाई और सफाई से सयाने बन जाएं।

**7)** मम्मा ने हमें धारणामूर्त बनाया और दीदी ने हमें पतिव्रता बनाया। दीदी की दिल अन्दर यही रहता कि इसका झुकाव और किसी आत्मा के प्रति न हो जाए। सदा एक बाबा प्रति ही रहे। भगवान के घर में कभी कोई झूठ न बोले। यही दीदी की आश रहती थी।

**8)** दीदी जी जब हॉस्पिटल जा रही थी तो बाबा ने कहा, साथ रहते, साथ बैठते साथ निभाया, साथी बनाया, तुम बाप के साथ हो, बाप तुम्हारे साथ है। साथ रहने का वायदा जन्मते ही किया। शरीर भल छूटे लेकिन यह साथी हमें छोड़ नहीं सकता। लौकिक में कोई भी ऐसा साथ दे नहीं सकता।

**9)** बाबा के हर कदम के पीछे अनेक गुह्य राज़ हैं और संगम का हर पल कल्याणकारी है। जैसे पहले हमने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि हमारा बाबा अव्यक्त होगा, लेकिन हमने ड्रामा की वह भी नई रंगत देखी। पहले शुरू में 14 वर्ष बाबा ने हम बच्चों से तपस्या करवाई फिर देश विदेश में बेहद की सेवा कराई। एक तपस्या जिससे रूद्र यज्ञ की स्थापना हुई, दूसरी तपस्या जिससे देश विदेश में सेवा का विस्तार हुआ।

**10)** बाबा ने दीदी को निमित्त बनाए आबू पहाड़ की चोटी पर बिठाया। इस आबू पर्वत पर रहते निमित्त बेगरी पार्ट बजाया, यज्ञ कुण्ड के अनेक कुण्ड बनाये, उसके बाद बाबा ने अपने अनेकानेक वारिस बच्चों को निकाला। कितने बच्चे तन-मन-धन से सहयोगी, निश्चयबुद्धि बने। भारत जो बाबा की जन्म भूमि है, उसमें पहले त्याग

तपस्या और सेवा का कार्य चला। मम्मा बाबा ने भारत में कई स्थानों पर जाकर अनेक सेवायें की। अनेक वारिस बच्चे पैदा किये। फिर बाबा ने यह पाण्डव भवन बनाया। यहाँ से हर कार्य बाकायदे चला। यहाँ से बच्चों को चारों ओर सेवा का अनुभव कराने भेजा। अपनी 16000 की माला तैयार कराई। तो मैं एक ओर देखती - कहाँ बेगरी पार्ट, कहाँ अनेक वारिस बच्चे और कहाँ बेहद सेवा... फिर बाबा ने अव्यक्त बन अपना पार्ट बजाया, उसके पहले हमारी प्यारी माँ और भाऊ विश्वकिशोर को गुप्त रीति से हम बच्चों के बीच से उड़ा लिया, उनके जाने की भी बड़ी गुप्त कहानी है, आगे चल इसका भी राज़ खुलेगा। हम जानते हैं कोई बहुत बड़े विशेष पार्ट के लिए हमारे यज्ञ के वारिस गये हुए हैं।

**11)** यह भी कैसा स्वप्ना हुआ जो बाबा अव्यक्त हुआ, अव्यक्त होने के बाद विश्व सेवा का विस्तार हुआ। विश्व की अनेकानेक आत्माओं के दिलों में बाबा की छाप बैठी। बाबा जो कहता मैं सर्व आत्माओं का, सर्व धर्मों का भी ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर हूँ, वह पार्ट अव्यक्त होने के बाद प्रत्यक्ष हुआ। अभी विदेशों में ऐसा पार्ट बज रहा है, जो देश तो देश है लेकिन विदेश देश से भी दुगुना आगे जा रहा है। बाबा ने ऐसी चाबी बनाई है जो बुद्धिवानों की बुद्धि बन सबकी बुद्धि को चेन्ज कर रहे हैं। दूर दूर से बच्चे आते, बाबा के दो शब्द सुनकर कितना खुश हो जाते, अव्यक्त में भी साकार का अनुभव कर जीवन के लिए बल भर जाते।

**12)** अव्यक्त होने के 14 वर्ष बाद बाबा ने जिसे निमित्त बनाया, उसे ही अपनी गोदी में नई रचना के लिए, योगबल की शुरूआत के लिए बुला लिया। दीदी को बाबा ने कैसे अपनी गोदी में छिपाकर बिठाया है, आज दीदी बेहद के तख्त पर बैठ विश्व में घूम रही है। दीदी बाबा के साथ अनेक सेवायें कर रही है।

**13)** बाबा हमेशा कहते - तुम शक्तियों का अन्त में विशेष पार्ट है, तो अब शक्तियों का पार्ट भी तो खुलना चाहिए। शक्तियों का पार्ट भी तब खुले जब कोई कमाण्डर आगे जाए। तो यह भी दीदी का एक निमित्त पार्ट है। बाबा ने शक्ति रूपधारी हम सबकी प्यारी दीदी को निमित्त बनाया है, विशेष कोई पार्ट बजाने।

**14)** अगर सोचें - तो आता दीदी चली गई। लेकिन फीलिंग आती मधुबन में दीदी सदा हाज़िर है। यह भी अनायास कोई न कोई कारण बनता जो बाबा हरेक को हिलाता है। दिखाई देता है जो भी आत्मायें चली गई हैं वह फिर से हाथ पकड़ेंगी....ऐसी अनेक आत्माओं को नजदीक लाने का, उन्हें अंचली देने का यह भी दीदी का पार्ट है। यह प्रैक्टिकल रील चल रहा है। हमारी दीदी से अनेक आत्माओं का पुराना सम्बन्ध है, नाता है, वह फिर से आकर अपना वर्सा लेंगे। यह भी पर्दा खुलता जायेगा।

**15)** इस ड्रामा में यह 14-14 वर्ष का भी बड़ा खेल बना हुआ है। अब देखेंगे कि आगे 14 वर्ष में क्या होता है। कायदे अनुसार फिल्म का यह प्यारा रील चलता रहता है। कोई ऐसा कारण बनता है जो सबकी दिलों में आता कि अब घर जाना है। कल भी कहते आज भी कहते हैं कि घर जाना है, लेकिन अब यह दिल के अन्दर से आता, लहर आती कि अब हमें भी बाबा के वतन जाना है, कर्मातीत होना है।

**16)** बाबा, बाप-टीचर-सतगुरू के साथ धर्मराज भी है। कई दीदी से भी डरते थे। क्यों? दीदी को हमारी भूल का पता ना चले। दीदी हमेशा कहती सच्चे दिल पर साहेब राज़ी। जरा भी बात होती तो दीदी ने कभी भी बाबा से नहीं छिपाई। दीदी सामने आती थी तो बाबा का चेहरा ही कुछ और हो जाता था। सच्चाई की शक्ति ऐसी हो जो परमात्मा से प्रेम खींच सके, मांगने से प्रेम नहीं मिलता और सब कुछ मिल सकता, ज्ञान भी सुन और सुना सकते पर प्रेम पाने के लिए सच्चाई चाहिए।

**17)** दीदी की खूबी, जो भी सामने आये उससे कौन सी सेवा लेनी चाहिए, ताकि उसका भाग्य बन जाए। कैसे ईश्वर से उसका स्नेह जोड़कर उनसे सेवा करायें ताकि उसका भाग्य बनता रहे। तो हमें भी उनसे यही प्रेरणा लेनी है।

**18)** ड्रामा के इस विचित्र पार्ट के अनुसार मीठी दीदी ने हम सबको यही लेसन दिया है कि अब सभी उपराम बनो। तो हम सबको अपनी इन अन्तिम श्वांसों में उपराम रहकर इस थोड़े से समय में हमें फुल मार्क्स लेनी हैं। जितनी जितनी हमारी वृत्ति उपराम रहेगी उतना व्यक्त भावों की वृत्ति खत्म होती जायेगी। कहा भी जाता - तुम्हें लेना क्या, देना क्या, तू साथ क्या ले जायेगा। हरेक जब जाता है तो अपने गुण ही छोड़ जाता, जिन गुणों का ही फिर सब गायन करते हैं।

**19)** आज दीदी के प्रति हरेक के दिल से प्यार का आवाज निकलता क्योंकि दीदी ने सबकी प्यार से सेवा की है, उस सेवा के कारण ही सबको दीदी की आकर्षण होती, सबके मुख पर दीदी है इसीलिए सब याद करते हैं, गुणगान करते हैं।

**20)** हरेक का दीदी के प्रति प्यार तो अटूट है, लेकिन उस प्यार का अब रिटर्न भी देना है। ऐसा रिटर्न दो जो कोई भी यह फील न करे कि दीदी चली गई या दीदी अबसेन्ट हैं। कई पूछते हैं - दीदी की जगह कौन? मै कहती हरेक समझें हम सब दीदी के अंग हैं। हम सब दीदी की विशेषताओं को स्वयं में भर ले तो हम ही दीदी की जगह पर हैं। हम स्वयं दीदी का रूप बनें। तो यह प्रश्न ही खत्म हो जाता।

**21)** हम कोई वैरागी बाबा या हठयोगी बाबा नहीं हैं लेकिन हमारी स्थिति वानप्रस्थी उपराम चाहिए। उपराम वृति से व्यक्त वायब्रेशन खत्म हो जाते हैं। हम योग के वायब्रेशन से ही अपने किले को पॉवरफुल बना सकते हैं। कम से कम 8 घण्टे योग का चार्ट जरूर बनाना है। हरेक को यह पुरुषार्थ करना है। कभी भी किसी के पुरुषार्थ को देख टोन्ट नहीं कसना है। उसकी हंसी नहीं उड़ानी है। एक छोटी सी हंसी के आधार पर ही सारा महाभारत बना है। इसलिए कभी भी टोन्ट नहीं मारो। टोन्ट भी दु:ख देता है। हमारे किसी भी शब्द से किसी को दु:ख न हो। ऐसा कोई भी बोल न निकले जिससे नुकसान हो जाए।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

# कनेक्शन जोड़ने की विधि - 1994

**1)** जैसे लाइन क्लीयर होती है तो बिजली वा रोशनी पहुंचती है। ऐसे जब अपनी बुद्धि की लाइन क्लीयर है, अपने सूक्ष्म संकल्प एक बाबा के ही साथ जुड़े हुए हैं, बुद्धि में सदा ज्ञान का मनन चिंतन है, सदा सेवा में, बाबा के गुण वा शक्तियों को धारण करने में ही तत्पर हैं तो कनेक्शन ठीक होने से, सर्व शक्तियों की लाइट से स्वयं की चेकिंग यथार्थ होती रहती है। अगर कनेक्शन राइट नहीं है तो खुद की चेंकिग भी नहीं कर सकते। यदि मेरी बुद्धि की लाइन क्लीयर है, कनेक्शन ठीक है तो बापदादा वा दैवी परिवार से यह सर्टीफिकेट मिल जाता कि मैं सच्चे बाप से सदा सच्ची हूँ। मेरी दिल साफ है अर्थात् मन में जो भी संकल्प उठते हैं, वह भी सच्चे हैं। सच्चाई और सफाई इन दोनों शब्दों का भी अर्थ है। एक तो मैं सत्य बाप के सत्य ज्ञान के पथ पर हूँ, इसलिए मैं सत्य हूँ। एक है सत माना अविनाशी हूँ, एक है सत्य माना सच्ची हूँ। फिर है सफाई। जैसे घर में कोई किचड़पट्टी न हो तो कहते बहुत सफाई है। दूसरा है मेरे दिल में कोई भी व्यर्थ किचड़ा नहीं है। माना न मेरे में इम्प्युरिटी का किचड़ा है, न झूठ-चोरी या ठगी का किचड़ा है। ऐसे स्वभाव, संस्कारों का भी मेरे में कोई गंद नहीं है। किसी प्रकार की झरमुई झगमुई, परचिंतनों का भी मेरे में किचड़ा नहीं है। दूसरों के प्रति दोष दृष्टि रख देखना, दोष दृष्टि रख व्यवहार करना, खुद को निर्दोषी और दूसरों को दोषी बनाना - यह भी सफाई नहीं है। जिसमें खुद का देह अंहकार होगा, वह कभी भी दिल का साफ नहीं होगा। उसके अन्दर अभिमान का नशा होगा। और सच्चाई वाला सदा निर्मान होगा। जिसमें निर्मानता नहीं है, अण्डरस्टुड है कि उसके अन्दर देह-अभिमान है, देह अभिमान है माना वह साफ नहीं है, उसके अन्दर दूसरों के प्रति दोष दृष्टि रहती।

**2)** साफ दिल वाला अपनी गलतियों की करेक्शन करेगा, रियलाइज़ करेगा। कई बार कईयों को रांग राइट की भी रियलाइजेशन नहीं होती। समझाओ तो भी समझेंगे नहीं। रियलाइज नहीं करेंगे कि मैं किस बात में रांग हूँ या किस बात में राइट हूँ। तो यह रियलाइजेशन की शक्ति भी दिल की सफाई से आती है। जो एक सेकण्ड में रियलाइज कर लेते हैं उसे करेक्शन करना भी सहज हो जाता है। दूसरे के कहने से पहले वह खुद को ही रियलाइज कर परिवर्तन कर लेते हैं।

**3)** सच्चाई वाला, साफ दिल वाला कभी किसके संगदोष में नहीं आता। संग का दोष लगता ही उसे है जिसका कनेक्शन टूटा हुआ है अथवा जो साफ दिल नहीं है। जहाँ साफ दिल नहीं है वहाँ जरूर कोई खोट है, झूठ है। तो वह संगदोष में जल्दी आ जायेगा। जैसे सोना है वह साफ है, सच्चा है तो उसकी वैल्यु है और जब उसमें जब झूठ अर्थात् अलाए पड़ जाती है तो उसकी वैल्यु चली जाती। उसको कहेंगे मिक्स सोना। तो यह संगदोष भी हमारी स्थिति को बहुत खराब करता है। एक दूसरे की सच्ची लगन को तोड़ता है। बाबा से लगन तभी टूटती है जब लाइन क्लीयर नहीं है फिर संग का दोष लग जाता है और जहाँ संग का दोष लगा वहाँ निश्चय बुद्धि के बदले संशय जरूर पैदा होगा। संशय भी अनेक प्रकार का है। एक संशय है जो मैं मानती ही नहीं कि बाबा कौन है। एक सूक्ष्म संशय है जो श्रीमत का उल्लंघन करते। मर्यादा उल्लंघन करता ही वह है जिसके दिल में सच्चाई सफाई नहीं है, जिसे बाबा के साथ का अनुभव नहीं है। बाबा साथ है तो कोई कैसी कठिन बात भी आये उसे वह सहज पार कर लेता है, जिसके लिए कहा जाता सच की नांव हिले बहुत पर डूबे नहीं।

**4)** सच्ची दिल वाला बाबा को ही साथी देखता और बाप के ही साथ रहता है। उनके लिए कितनी भी कोई कठिनाई आवे, वह सहज पार कर लेता है। वह कभी दूसरे के संग में नहीं आता। तो पहले चाहिए बुद्धि की सच्चाई और सफाई, तब ही कनेक्शन राइट होगा। कई कहते हैं हमें योग का अथवा बाबा से सर्व संबंधों का अनुभव नहीं होता या मैं बाबा की शक्ति का स्वयं में अनुभव नहीं करती - मैं कमजोर हूँ तो इन सबका कारण है कि बाबा से सच्चे दिल की लगन नहीं है। बाबा से लाइन क्लीयर नहीं है अथवा बाबा जो है जैसा है, ऐसा यथार्थ जाना नहीं, पहचाना नहीं। अगर बाबा जो है जैसा है मैंने पहचाना तो मेरे में इतनी लगन वा शक्ति भी होगी। तो पहले अपना कनेक्शन देखना है कि मेरे में कोई देह अभिमान तो नहीं है? मेरे पर किसी के संगदोष का असर तो नहीं होता है? मेरे में किसी भी बात के कारण कभी संशय उत्पन्न तो नहीं होता? ऐसे अनेक बातों से खुद को चेक करना है।